INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 11 | DECEMBER - 2022

लक्ष्मीकांत वर्मा जी के कहानियों का अध्ययन

लक्ष्मी वर्मा[1], डॉ. समय लाल प्रजापति[2]
[1]शोधार्थी हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]सह–प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

लक्ष्मीकांत वर्मा का व्यक्तित्व विविधताओं का संग्रह था, वो भावुक भी थे और कठोर भी, उनमें दया और करूणा की मात्रा अधिक थी। सदा प्रसन्न रहना, दूसरों की मदद करना, अपनी सभ्यता और संस्कृति से प्यार करना और उसका सम्मान करना उनके व्यक्तित्व के गुण थे। अनर्गल जर्जर मान्यताओं को त्याग, प्राचीनता को समाप्त कर नवीनता का आग्रह, बड़े छोटे का अभेद आदि इनकी विशेषताएं थी। इनका व्यक्तित्व इतना विराट था कि उसमें अनेक विरोधी प्रवृत्तियों और गुणों का समन्वय था। कभी–कभी उनका स्वभाव एकदम सामान्य होता, तो कभी स्वभाव से मनमौजीपन आ जाता। कहीं कोई गोष्ठी हो, बुलाये गये हों या नहीं इसकी चिन्ता वे नहीं करते थे, मन किया तो रिक्शा पर बैठे और पहुँच गये। हमेशा उनके घर में परिचितों का आना–जाना लगा ही रहता था। घर पर मेहमानों के स्वागत के लिए क्या हैं? इसकी परवाह वे नहीं करते थे। रास्ते में मिलने वाले हर परिचित को आमंत्रित कर लेना उनका स्वभाव था। प्रायः सबसे घरेलू सम्बन्ध बना लेते थे। उनके सुःख–दुःख की जानकारी भी रखते थे।

मुख्य शब्द – लक्ष्मीकांत वर्मा, कहानी दया एवं करूणा ।

प्रस्तावना –

लक्ष्मीकांत जी ने कहानी के क्षेत्र में कुछ प्रयोग किये हैं। वह कहानी को कथाकार की सहज अभिव्यक्ति मानते थे। लक्ष्मीकांत वर्मा की चार कहानी संग्रह में तीन प्रकाशित हो चुके हैं और एक अप्रकाशित है। नीली झील का सपना और मेरी कहानियां संग्रह की सभी कहानियां एक ही है। सिर्फ मेरी कहानियां संग्रह में एक कहानी नरक का अंत और जुड़ जाती है। तीसरा कहानी संग्रह नीम के फूल है। अप्रकाशित कहानी संग्रह हिरनी की आंखे हैं।

लक्ष्मीकांत जी की कहानियों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. मनोवैज्ञानिक कहानियां
2. रहस्यात्मक कहानियां

मनोवैज्ञानिक कहानियों में कहानी संग्रह नीली झील का सपना और नीम के फूल की सभी कहानियां सम्मिलित है। मेरी कहानियां की एक अतिरिक्त कहानी नरक का अंत भी सी श्रेणी में आता हैं। वर्मा जी की कहानियां मूल तत्वों (कथानक, पात्र, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, वातावरण, शैली और उद्देश्य) की कसौटी पर खरी उतरती है।

किसी भी कहानी में कथानक महत्वपूर्ण होता है। कथा ही कहानी की जीवनदायिनी शक्ति होती है। नीली झील का सपना कहानी संग्रह की स्वेटर, कालाफूल, स्टिल लाइफ और पिरामिड की पर्ते, कहानियां भाव प्रधान है, जिसमें कहानी के नायक की संवेदना कहीं न कहीं किसी वस्तु, किसी भावनात्मक प्रतीक या किसी अति संवेदनशील वाक्य से जुड़ी है।

स्वेटर कहानी एक निम्न मध्यम वर्ग की एक स्त्री मुक्ता और एक ऐसी बच्ची (मधु) जो उसकी नहीं है, के प्रति समर्पण से जुड़ी है, कमल बाबू जो कहानी का नायक है। वह भी अनायास उस बच्ची के मोह से अपने को पृथक नहीं कर पाता है। मनोवैज्ञानिक रूप से यह कहानी दो व्यक्ति कमल बाबू और मुक्ता के एकांकी जीवन की सफल अभिव्यक्ति है। स्वेटर कमल बाबू को दस साल पुरानी घटना को फ्लैश बैक के रूप में याद कराता है कि वह मधु से कैसे मिला और कब मुक्ता से उसने स्वेटर बुनवाया?

इस संग्रह की दूसरी कहानी कालाफूल है। यह कहानी अतीत की स्मृतियों से उपजी है। यह असफल प्रेम की कहानी है। अतीत की स्मृति में कालाफूल का स्मरण कहानी का बिन्दु है, जिससे पुष्पा जुड़ी हुई है। रोहित उसका पूर्व प्रेमी है जो उसके हाथ पर फूल अक्सर बनाया करता था। भावना के साथ–साथ इस कहानी में मांसलता का भी पुट है।

तीसरी कहानी स्टिल लाइफ जीवन के यथार्थ और द्वन्द्व को दर्शाती है। कहानी में प्रतीकों का प्रयोग है। यह कहानी पुरूष प्रधान समाज की मानसिकता और स्त्री पीड़ा घुटन की आम कहानी है। शशि और उसके जीवन दा का आपस में लगाव इस कहानी का विषय बन जाता है, जो शशि के पति शेखर और जीवन दा की पत्नी के शंकालु मन में ईर्ष्या भर देता है। यह कहानी संकुचित सोच वाले स्त्री पुरूष की मानसिकता को उजागर करती है।

चौथी कहानी मरने के पहले और मरने के बाद कहानी के कथानक में उलझाव दिखाई देता है। यह कहानी सपाट नहीं भागती। यह अतीत, वर्तमान और भविष्य के द्वन्द को मुखरित करती है। नीलिमा मैं (अजित), शोभा, क्रिस्टी और प्रकाश (रिटायर्ड इंजीनियर) आदि कहानी के मुख्य पात्र हैं। नीलिमा और मैं एक दूसरे से प्रेम करते हैं पर मैं को इस बात का अहसास बहुत बाद में होता है। कहानी के कथानक में बिखराव अत्यधिक है। लक्ष्मीकांत जी की यह कहानी परामनौवैज्ञानिक ऊहापोह में संस्मरणात्मक पहेली बन जाती है।

पांचवी कहानी पत्थर का जिस्म है, यह घटना प्रधान कहानी है। इस कहानी में दो बहुत छोटी घटनायें हैं। डा. रेखा का चित्रा पर प्रभाव और दूसरा डा. चित्रा का एक ऐसे बच्चे को आसानी से दे देना, जिसकी मां जन्म देते समय मर जाती है और डा. चित्रा उसे पालने लगती है। एक दिन उसे बच्चे के पिता और नाना यह कहकर कि यह बच्चा मेरा है, उसे ले जाते हैं। यह दोनों घटनायें असहज है और यह डा. चित्रा के सहज मनोविज्ञान को सहज भाषा में व्यक्त करती है। यही इस कहानी की विशेषता है।

छटवी कहानी पिरामिड की पर्तें एक ऐसी लड़की की जिन्दगी के क्षणों की कहानी है जो अपने परिवार के जीवनयापन के लिये दफ्तर में टाइपिस्ट की नौकरी करती है। उसका नाम नीरू है। उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है। जब वह उन्मुक्त होने की सोचती है तो वह अपने को जीवन और केवल के बीच में फंसा हुआ पाती है। उसकी कुछ क्षणों की उन्मुक्तता ही अंत में उसके जीवन को फफोलों की पर्तों के स्वरूप पिरामिड बना देती है।

नीली झील का सपना कहानी कई घटनाओं को अपने साथ जोड़कर चलती है। यह कहानी प्रेम और अनुभूति के स्तर पर मानव मनोविज्ञान को चित्रित करती है। अजित, मधु और सुषमा यह कहानी के मुख्य तीन पात्र हैं। अजित और मधु एक दूसरे को प्रेम करते हैं, फिर शादी कर लेते हैं। सुषमा अजित से पढती थी, तभी से अजित से प्रेम करने लगी। उसका एक तरफा प्रेम, इस कहानी का कथानक है। इस कहानी में तीनों का मनोविज्ञान दर्शाने का वर्मा जी का प्रयास रहा है।

नीम का फूल कहानी संग्रह में ग्यारह कम्पनियाँ हैं, जिसमें दो कहानियां नीली झील का सपना कहानी संग्रह की है। इस संग्रह की प्रथम कहानी काला फूल है। द्वितीय कहानी परिवर्तन है। परिवर्तन दो पीढ़ियों का द्वन्द्व है। एक ओर रामायण की चौपाइयों के सस्वर पाठ को लेकर, दूसरी तरफ जन्म दिवस की आधुनिक शैली का द्वन्द्व है। इस कहानी की नायिका बिन्दु रानी और उसका देवर जो कवि हृदय है। उसने स्त्री को अपने ढंग से परिभाषित किया है। इसमें वर्मा जी ने एक जगह लिखा है–''हर औरत एक फूल की जिन्दगी जीती है। वह हंसती है तो सारा चमन हंस पड़ता है, वह हटती है तो जैसे सारा चमन सूना हो जाता है। वह जब द्रवित होती

है तो सुगन्ध बनकर बिखरती है। वह जब पिघलती है, तो करूणा का प्रतिरूप हो जाती है। मां हो जाती है – सृजनशील हो जाती है। जब स्पर्धा से विह्वल हो जाती है, तो काठ हो जाती है ... पत्थर हो जाती है लेकिन रहती फूल ही है। वह चाहे पैखुरियो की बनी हो, चाहे काठ की, चाहें पत्थर की ..।[1]

विश्लेषण –

कहानी का संदेश यही है कि अगर बिखरते हुये परिवारों के बीच में भाभी जैसा कोई चरित्र आ जाये तो परिवार को टूटने से बचाया जा सकता है।

तीसरी कहानी दो जिन्दगी : दो राहें में वर्मा जी ने व्यक्ति की जिन्दगी को दो राहों पर चलता बताया है। एक विवाह पूर्व की राह, और एक विवाह के बाद की राह। इस कहानी में मुकुल और अजीत ऐसे पात्र हैं, जो दो जिन्दगी जी रहे हैं और अलग–अलग राहों पर चल रहे हैं। शकुन नाम की नायिका उन दोनों की जिन्दगी में हलचल मचा देती है। आजादी के बाद हुये हिन्दू मुस्लिम के दंगे, इस कहानी के केन्द्र बिन्दु है। इस कहानी में निशीत और राका नाम के दो पात्र भी हैं, जो कहानी में अहम भूमिका निभाते हैं।

चौथी कहानी धर्मशाले की एक रात है। यह एक छोटी कहानी है, जिसकी नायिका एक वेश्यावृत्ति वाली महिला है। वह स्वयं कहती है ''लोग हम ही को बुरा कहते हैं, पर यह नहीं जानते कि यौवन के जिस रूप पर सैकड़ों मरने वाले होते हैं, बुढ़ापे में मुंह पर थूकने भी नहीं आते। फिर हम न पैसों पर मरें तो मरे कौन?[2] नारी जीवन की हदें भी इस कहानी में दिखाई गयी है।

पांचवी कहानी बीते दिन बिसरी बातें हैं। मैं की शैली में लिखी गयी यह एक प्रयोगात्मक कहानी है। मैं की सह पाठिका रेखा है, जो स्वभाव से चंचल है। वह चंचलता में अश्लीलता का समावेश नहीं पसन्द करती। वह अध्यापकों के कार्टून चित्र बनाती है। एक अध्यापक प्रोफेसर मजूमदार है जिनकी पत्नी को दो माह बाद फालिज मर जाता है। प्रो. मजूमदार, मैं और रेखा तीनों के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इतनी भावुकता से वर्मा जी ने किया है जैसे उनका भोगा हुआ सच हो।

छठी कहानी एक दर्द भरी आवाज है। यह कहानी रहस्य और रोमांच के कथाक्रम में आती है। डा. कमल की लड़की इति के चारो ओर यह कहानी घूमती है। यह कहानी टेलीफोन पर आये सिर्फ एक वाक्य के दायरे में है और वाक्य है– तुम बोल रही हो इति? कैसी हो? ठीक तो हो न?''[3] डा. कमल इस टेलीफोन से बहुत परेशान है, वह पुलिस को भी इसकी सूचना देते हैं। पुलिस असफल रहती है। यही इस कहानी का कथानक है।

अगली सातवीं कहानी हास्य से जुड़ी है। कहानी का नाम है कामनसेन्स स्टोर। इस दुकान का मालिक रत्नेश कुमार आर्या परचून की दुकान चलाता है, उनकी दुकान पर रोज नया पोस्टर लगता था। यह एक व्यंग्यात्मक कहानी है। इस कहानी में वर्मा जी ने चालाक व्यापारी किस प्रकार सीधे सादे ग्राहक को अपनी बातों में फंसाकर गलत सामान पकड़ा देते हैं, इसका सहज उल्लेख किया है।

आठवीं कहानी का नाम आदमी और आक्टोपस है। इस कहानी में समाज के कुलीन वर्ग और उनकी व्यवस्था के ऊपर करारी चोंट की है। पैसे की चमक–दमक के बीच हर तरह के गुनाह करने वाले लोग कैसे बुद्धिजीवी बन जाते हैं और कैसे चिन्तन और दर्शन की बकिया उधेड़ते हैं। इसी का वर्णन है। इस कहानी का नायक शेखर है। पूरी कहानी शेखर के व्याख्यान पर आधारित है। इस कहानी में वर्मा जी ने मनुष्य के दूसरे चेहरे को दर्शाने का प्रयास किया है, चाहे वह सेठ बावनदास का हो या जज का या फिर भैरोलाल का। ठीक वैसे ही शेखर का चरित्र है।

नवीं कहानी नीली झील का सपना उपरोक्त दी जा चुकी है।

दसवीं कहानी अधूरा वाक्य व्यक्तिगत मनोभावों के अधूरेपन की कहानी है जिसमें केवल बाबू उलझ कर रहे गये हैं। पात्र ताई जी और कमला का जीवन इतना संदिग्ध है कि वह अपने ही विचारों के समुन्दर में डूबते उतराते रहते हैं। यह कहानी मनोवैज्ञानिक होने के साथ ही साथ प्रयोगवादी भी है।

उनकी आखिरी कहानी नीम के फूल है। कहानी की शुरूआत में ताई जी के निधन और घर के सूनेपन का वर्णन है। उनकी बेटी शशि जो एक इंजीनियर की पत्नी है। शशि को घर के वातावरण में ताई जी का अहसास होता रहता है। इस कहानी का नायक मानिक है। शन्नो शशि की बहन है। ताई जी के मरने पर जब शशि नहीं आयी तो वह शशि को बड़ा भला बुरा कहती है। मैं (मानिक) का शशि से भावानात्मक सम्बन्ध है।

नीम का पेड़ जिसे मकान मालिक हर बार जहरीला पाउडर डालकर नष्ट कर देता है। शशि हर बार पेड़ के विकास के लिये तत्पर रहती है। वर्मा जी ने इस कहानी में संदेश दिया है कि मनुष्य को अपनी आशाओं और आकांक्षाओं के साथ जीना चाहिये। फिर उनमें कठिनाई ही क्यों न आये।

नरक का अंत मेरी कहानियां संग्रह की कहानी है, जिसमें चार पात्र है। चन्दन, लेखराज, किरन और विमल। 'किरन' कहानी की नायिका है वह यह जानते हुये कि लेखराज की शादी हो गयी है, लेखराज से विवाह करती है। लेखराज अपनी रोजी–रोटी की जुगाड़ में किरन का इस्तेमाल करता है। वह किरन पर तरह–तरह के अत्याचार करता है और ठेकेदार चन्दन को सौंपकर रूपये ऐंठते रहता है। विमल पत्रकार है, वह दार्शनिक की भांति यह सब देखता है। यह कहानी भारत की विसंगतियों को दर्शाती है।

हिरनी की आंखे वर्मा जी की मनोहर कहानियों में प्रकाशित कहानियों का संग्रह है। इसमें सात कहानियां है। इसकी प्रथम कहानी सौंप और छाया किवदन्तियों की कहानी है। इस तरह की कहानी अक्सर गांव के लोक जीवन में प्रचलित रहती है। इस कहानी में सुनीता, शिशिर और सांप, तीन पात्र मुख्य है। सांप सुनीता का पूर्व प्रेमी है, जो सुनीता के विवाह उपरान्त उसके साथ सोता है। सुनीता का पति शिशिर हमेशा बाहर रहा करता था। एक दिन जब शिशिर ने उस सांप को सुनीता के पास से हटाना चाहा तो वह सर्प शिशिर को दौड़ाने लगा, शिशिर ने आंगन में पड़ी सिल को उस सांप पर उठाकर पटक दिया, जिससे उसकी पूंछ कट गयी और वह सांप भाग गया। जब सांप सुनीता के पास आया तो उसकी पूंछ में असंख्य चीटियां चिपकी थी, सुनीता ने हमेशा की तरह उन चीटियों को साफ नहीं किया और उल्टा उसे भगाने लगी, सांप ने क्रोध में आकर सुनीता को काट लिया। सुबह शिशिर ने देखा कि सुनीता के ऊपर वह सांप फिर बैठा है उसे जगह–जगह दंश किया है। चौथे दिन सांप के हटने पर सुनीता का दाह संस्कार हुआ।

हिरनी की आंखे यह भी रहस्य प्रधान कहानी है जिसमें जसवन्त सिंह अपने नौकर जोखू के मना करने पर भी हिरनी के शिकार के लिये नीली झील जाता है। पुराने लोगों का मानना है कि वह श्रापित जगह है। जसवंत सिंह शिकार करके मरी हुयी हिरनी घर लाकर बर्फ पर रखता है। उस हिरनी की आंखों का दर्द जसवन्त का जीना मुश्किल कर देता है। वह जिधर देखता है। उसे हिरनी दिखाई देती है, यह इस कहानी का कथानक है।

कांसटेबल कहानी प्रेतात्माओं की अचम्भित घटनाओं की व्याख्या करती है। इसी तरह डाक बंगला भी रहस्यमयी कहानी है। इस कहानी में डाक बंगले में एक लम्बे ओवर कोट और काला चश्मा लगाये आदमी का भूत घूमता है। थारू धन कहानी ऐसी घटनाओं पर आधारित है जिसमें मरने वाले का मन किसी गड़े खजाने व रूपये पर लगा रहता है। उसकी आत्मा उस धन के पास भटकती रहती है। कहानी का नायक मैं एक मार्केटिंग इंसपेक्टर है, जो चपरासी गोविन्द सिंह के मना करने पर ऐसी ही कोठी खरीद लेते हैं। अन्त में बिच्छु के दंश से मैं और गोविन्द की हालत खराब हो जाती है और गोविन्द मर भी जाता है।

काली परछाइयां कहानी भूतो, प्रेतों, तंत्र–मंत्र एवं इतिहास की खुदायी से सम्बन्धित है। इस कहानी का कथानक प्राचीन सभ्यताओं के गड़े अवशेषों और इन खण्डहरों के गर्भ में जितने शुभ–अशुभ चिन्ह छिपे हैं, इस पर आधारित है, जिसमें औधड़ पंथी के साथ–साथ रहस्यात्मकता है।

इशरत महल भी रहस्यात्मक श्रेणी की कहानी है। वर्मा जी की यह कहानियां धनोपार्जन के लिये लिखी गयी थी। एक कहानी पर उन्हें चार सौ रूपये मिलते थे। भूत–प्रेतों से जुड़ी यह कहानी के कथानक काफी विस्तृत है। हर कहानी पच्चीस तीस पेजों से कम की नहीं है। इन कहानियों का न तो कोई उददेश्य है और न ही यह कोई उपदेश देती है। यह केवल मनोरंजन की कहानियां हैं, जो लोक जीवन से जुड़ी है। इसलिये इन कहानियों में भाषा की धारावाहिकता और निरन्तरता है। वर्मा जी कहानियां मध्यमवर्ग से सम्बद्ध है। अधिकांश कहानियों में उनके देखे और भोगे हुये सत्य की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। कहानियों के पात्र जीते–जागते संवेदनशील पात्र हैं, जो आज की जटिलताओं और विषमताओं में उलझ कर रह गये हैं।

लक्ष्मीकांत वर्मा जी ने पात्रों की स्थिति, पृष्ठभूमि तथा मनोवृत्ति के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। पात्रों की प्रकृति तथा भावों को व्यक्त करने के लिये कहीं छोटे, तो कहीं बड़े वाक्यों का प्रयोग किया है। वर्मा जी की ज्यादातर कहानियां ''मैं'' शैली में लिखी गयी है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः लक्ष्मीकांत वर्मा जी की कहानियों में तत्कालिक घटनाओं का समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाने की विशेषता है कि लम्बी कहानी होने के बाद भी कहानी की लयात्मकता टूटती नहीं है। वर्मा जी की कहानियों के विषयों में भी विविधता है। कहीं एकांकी जीवन और त्याग है तो कहीं असफल प्रेम, कहीं पुरूषों की मानसिकता और स्त्री की पीड़ा घुटन की कहानी है तो कहीं विषमताओं से जूझती स्त्री की विसंगतियां। वर्मा जी ने रहस्य, रोमांच और लोक जीवन से जुड़ी कहानियों को भी अपना विषय बनाया। आदमी और आक्टोपस कहानी द्वारा तो वर्मा जी ने समाज के कुलीन वर्ग और उनकी व्यवस्था पर करारी चोट की है। लक्ष्मीकांत वर्मा जी की लेखनी को मां सरस्वती की ऐसी कृपा थी कि वह जिस विषय पर लिखना शुरू करते, तो विचार खत्म नहीं होते थे। भले ही कागज खत्म हो जाये। यही कारण था कि हर विधा में उन्होंने अपनी लेखनी चलायी।

संदर्भ –

[1] कहानी संग्रह 'नीम के फूल', कहानी–परिवर्तन, पृष्ठ 18
[2] कहानी संग्रह, 'नीम के फूल', कहानी – धर्मशाले की रात, पृष्ठ 51
[3] कहानी संग्रह 'नीम के फूल', कहानी–एक दर्द भरी आवाज, पृष्ठ 70